नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

जारी रहे शिक्षा में सुधार

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा केवल एक राजनीतिक घटना नहीं है, बल्कि यह देश की परीक्षा व्यवस्था और शिक्षा तंत्र पर उठे गंभीर सवालों का संकेत भी है. किसी मंत्री का जाना या आना लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा है, लेकिन इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण यह है कि क्या इस घटनाक्रम के बाद शिक्षा व्यवस्था में ऐसे सुधार होंगे, जो भविष्य में लाखों विद्यार्थियों का विश्वास दोबारा स्थापित कर सकें.

पिछले कुछ वर्षों में प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक, परीक्षा प्रबंधन में गड़बड़ियां और भर्ती प्रक्रियाओं में देरी जैसी घटनाओं ने युवाओं का भरोसा कमजोर किया है. लाखों विद्यार्थी वर्षों तक कठिन परिश्रम करते हैं, परिवार अपनी बचत कोचिंग और पढ़ाई पर खर्च करते हैं, लेकिन यदि परीक्षा की निष्पक्षता ही संदेह के घेरे में आ जाए तो सबसे बड़ा नुकसान प्रतिभा और विश्वास का होता है.

इसलिए आज सबसे बड़ी आवश्यकता किसी व्यक्ति विशेष पर बहस करने की नहीं, बल्कि पूरी परीक्षा प्रणाली की व्यापक समीक्षा करने की है. परीक्षा आयोजित करने वाली संस्थाओं को अधिक स्वायत्त, जवाबदेह और तकनीकी रूप से सक्षम बनाना होगा. प्रश्नपत्रों की सुरक्षा के लिए आधुनिक डिजिटल सुरक्षा प्रणाली, परीक्षा केंद्रों की बेहतर निगरानी, समयबद्ध जांच और दोषियों के विरुद्ध त्वरित दंड सुनिश्चित करना अब अनिवार्य हो गया है.

इसके साथ ही केवल दंडात्मक व्यवस्था पर्याप्त नहीं होगी. परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता बढ़ाने, शिकायत निवारण की प्रभावी व्यवस्था बनाने और अभ्यर्थियों के साथ नियमित संवाद स्थापित करने की भी आवश्यकता है. यदि विद्यार्थियों को यह भरोसा होगा कि किसी भी गड़बड़ी की निष्पक्ष जांच होगी और समय पर न्याय मिलेगा, तभी शिक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता मजबूत होगी.

राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी सहित सभी परीक्षा संस्थाओं की कार्यप्रणाली का स्वतंत्र मूल्यांकन भी समय की मांग है. यह देखना होगा कि वर्तमान संरचना भविष्य की चुनौतियों के अनुरूप है या उसमें व्यापक संस्थागत सुधार की आवश्यकता है. शिक्षा जैसे संवेदनशील क्षेत्र में केवल संकट आने पर प्रतिक्रिया देना पर्याप्त नहीं, बल्कि ऐसी व्यवस्था बनानी होगी जिसमें संकट पैदा होने की संभावना ही न्यूनतम रह जाए.

भारत आज दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है. विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा, जब युवाओं को निष्पक्ष अवसर और भरोसेमंद परीक्षा व्यवस्था मिले. शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समान अवसर और राष्ट्रीय प्रगति की सबसे मजबूत नींव है.

धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा यदि शिक्षा व्यवस्था में व्यापक, पारदर्शी और स्थायी सुधारों की शुरुआत का कारण बनता है, तो यही इस पूरे घटनाक्रम का सबसे सकारात्मक परिणाम होगा. अब आवश्यकता राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से आगे बढ़कर ऐसी परीक्षा प्रणाली बनाने की है, जिस पर हर विद्यार्थी बिना किसी संदेह के विश्वास कर सके. यही देश के युवाओं और भारत के भविष्य के प्रति सच्ची जिम्मेदारी होगी.कुल मिलाकर शिक्षा में सुधार की प्रक्रिया जारी रहना चाहिए.

इस्तीफे को लेकर अडिग था विपक्ष

कृष्णमोहन झा

आखिरकार केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान को अपने पद से इस्तीफा देने के लिए विवश होना पड़ा. कॉकरोच जनता पार्टी और केंद्र सरकार के बीच दोपहर को होने वाली तीसरे दौर की बातचीत शुरू होने के कुछ देर पहले धर्मेन्द्र प्रधान ने अपना इस्तीफा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पास भेज दिया. अपने इस्तीफे में उन्होंने लिखा कि मैं देश के युवाओं, आकांक्षाओं और भावनाओं का बहुत सम्मान करता हूँ. काकरोच जनता पार्टी के प्रवक्ता आशुतोष रांका ने शनिवार सुबह कहा था कि अगर सरकार से केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा नहीं होता तो सरकार से बातचीत जारी रखने का कोई मतलब नहीं है. काकरोच जनता पार्टी ने केंद्र सरकार के साथ दूसरे दौर की बातचीत के बाद यह दावा किया था कि नीट पेपर लीक के बाद आत्महत्या करने वाले अभ्यर्थियों के परिजनों को उचित मुआवजा और प्रदर्शन कारी छात्रों के विरुद्ध कोई मुकदमा दर्ज न करने की उनकी मांग सरकार ने सैद्धान्तिक रूप से मान ली है साथ ही काकरोच जनता पार्टी ने यह चेतावनी भी दी थी कि नीट पेपर लीक मामले में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा नहीं होने की स्थिति में देश भर में इस आंदोलन का और बड़े रूप में विस्तार किया जाएगा. यहाँ यह भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि कांग्रेस पार्टी ने यह घोषणा की थी कि जब तक केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा नहीं हो जाता तब तक वह संसद में इस मुद्दे पर चर्चा के लिए तैयार नहीं होगी.

> इतनी किरकिरी होने के बाद भी केंद्रीय शिक्षा मंत्री पद से इस्तीफा न देने की जिद पर अड़े धर्मेन्द्र प्रधान आखिर अचानक ही अपना फैसला बदलने के लिए विवश क्यों हुए यह समझने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत के उस भाषण पर गौर करने की आवश्यकता है जो उन्होंने एक दिन पूर्व ही न ई दिल्ली में आयोजित विश्व मांगल्य सभा के एक महत्वपूर्ण समारोह में दिया था .अपने इस भाषण में संघ प्रमुख ने कहा था कि नयी पीढ़ी को अपनापन और समय देने एवं उसके साथ संवाद करने की आवश्यकता है . भागवत ने इस बात पर विशेष जोर दिया था कि नयी पीढ़ी के साथ संवाद करके ही उन्हें सही दिशा दिखाई जा सकती है . गौरतलब है कि भागवत के उक्त संबोधन के दो दिन पूर्व भाजपा के वयोवृद्ध नेता और अतीत में मानव संसाधन मंत्री रह चुके डा मुरली मनोहर जोशी ने भी छात्रों के संसद मार्च के बाद कहा था कि परीक्षा प्रणाली को लेकर छात्रों की चिंताएं और सरोकार वास्तविक हैं उन्होंने संसद मार्च में शामिल बलप्रयोग को निर्मम बताते हुए यहाँ तक कह दिया था कि बल का ऐसा इस्तेमाल भारतीय समाज के एक बड़े हिस्से को विकसित भारत के राष्ट्रीय लक्ष्य से दूर कर देगा .

कांग्रेस सहित समूचा विपक्ष धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर संसद के मानसून सत्र में लगातार हंगामा कर रहा था जिसके कारण संसद का कार्यवाही नहीं चल पा रही थी. जंतर मंतर पर सोनम वांगचुक ने जिन मांगों को अनशन प्रारंभ किया था उनमें केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे की मांग प्रमुख थी यद्यपि सोनम वांगचुक ने जब दो दिन पूर्व अपना अनशन समाप्त किया तो उन्होंने धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे की मांग पर जोर नहीं दिया था. कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे, राहुल गाँधी और प्रियंका गाँधी वाड्रा सहित 100 से अधिक वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं ने धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे सहित अन्य मांगों को लेकर प्रधान मंत्री आवास के समीप धरना देकर अपनी गिरफ्तारी दी. इसके बाद देश भर में यह आंदोलन व्यापक रूप से फैलता गया और मांग यही थी कि धर्मेन्द्र प्रधान इस्तीफा दें.

आंदोलनकारी छात्रों के आक्रोश को शांत करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यद्यपि अनेक फास्ट ट्रैक कोर्ट के गठन तथा पेपर लीक रोकने के लिए इसी सत्र में एक बिल लाने की घोषणा भी की, रात में छात्रों को संबोधित करते हुए इंस्टाग्राम पर लगातार दो संदेश भी दिए परंतु ये सारे कदम भी छात्रों को धर्मेन्द्र प्रधान के इस्तीफे की मांग से पीछे हटने के लिए तैयार नहीं कर सके. कुल मिलाकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि धर्मेन्द्र प्रधान को शिक्षा मंत्री पद पर कायम रखने के लिए सरकार अडिग है. इसके पीछे एकमात्र कारण यही माना जा रहा था कि सरकार यह संदेश नहीं देना चाह रही थी कि यदि विपक्ष और आंदोलन कारी छात्रों की मांग मानकर धर्मेन्द्र प्रधान को इस्तीफे के लिए कहा गया तो भविष्य में भी किसी मंत्री के इस्तीफे के लिए आंदोलनों का एक नया सिलसिला शुरू हो सकता है लेकिन अब सरकार को इस हकीकत को स्वीकार कर लेना चाहिए कि नीट पेपर लीक का मामला सामने आते ही नैतिकता के आधार पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री के पद से इस्तीफे की घोषणा करके धर्मेन्द्र प्रधान अपना कद बढ़ा सकते थे परंतु इतना सब होने के बाद मजबूरी में इस्तीफे की घोषणा करके उन्होंने पूरी सरकार को असहज स्थिति में पहुँचा दिया है.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)

विंध्य की डायरी

जिसको अध्यक्ष बनवाया उसी ने कहा विधायक हद में रहें...

डॉ. रवि तिवारी

राजनीति में कोई किसी का न तो स्थाई दोस्त होता और न ही दुश्मन, यह भी सही है कि राजनीति में पल-पल परिस्थितियां बदलती रहती हैं, जिसको विधायक ने नगर पंचायत अध्यक्ष बनवाया आज वही विधायक को हद में रहने के साथ मुंह न खुलवाने का अल्टीमेटम दे रहे हैं. दरअसल रीवा के नगर परिषद गुढ़ में अविश्वास प्रस्ताव को लेकर शुरू हुआ विवाद अब राजनीतिक रूप ले चुका है. भाजपा नेत्री एवं नगर पंचायत अध्यक्ष डॉ. अर्चना सिंह ने अपनी ही पार्टी के गुढ़ भाजपा विधायक नागेन्द्र सिंह पर कई गंभीर आरोपों की बौछार कर दी. दावा किया कि उनके खिलाफ लाया गया अविश्वास प्रस्ताव राजनीतिक षड्यंत्र का हिस्सा है और इसके पीछे विधायक की भूमिका है. कभी विधायक की करीबी रहीं अर्चना सिंह ने अल्टीमेटम के साथ यह भी कहा कि विधायक ने अपनी सीमाएं पार कीं तो मेरे पास बहुत कुछ है बोलने और दिखाने के लिये, तब शायद विधायक मुंह दिखाने के लायक भी नहीं रहेंगे. अब सवाल यह उठता है कि ऐसा क्या है? भाजपा के अंदर इस तरह की धमकी भरी लड़ाई शायद अनुशासन की बेड़ी को तोड़ कर शुरू हुई है. संगठन क्या संज्ञान लेगा यह तो वक्त बताएगा पर आरोपों पर विधायक का कहना है, आरोप नहीं सबूत हो तो देना चाहिए, राजनीति में यह सब चलता रहता है. यदि कोई प्रमाण सामने आएगा तो उसके आधार पर उसका जवाब भी देंगे. भाजपा के अंदर अब पार्टी फोरम में बात रखने के बजाय खुलकर लड़ाई आमने-सामने होने लगी है पार्टी की साख पर भी सवाल है?

बड़े फेरबदल के संकेत

लम्बे इंतजार के बाद पदोन्नति कर्मचारियों की हुई है, जिसके बाद अब फेर बदल की चर्चाएं भी तेज हो गई हैं. पदोन्नति के बाद रिक्त हुए पदों पर नई पदस्थापना एक नियमित प्रशासनिक प्रक्रिया है. ऊर्जाधानी में प्रभारी मंत्री के दौरे को लेकर बड़ा फेर बदल होने के संकेत हैं. खासकर पुलिस महकमे में हलचल तेज हो गई है. पुलिस विभाग के अंदर संभावित सूची को लेकर चर्चाओं का दौर लगातार जारी है. विपक्षी दल संभावित तबादलों और पदस्थापनाओं को लेकर सरकार पर सवाल उठा रहे हैं. आरोप है कि तबादला प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी होनी चाहिये और इसमें किसी प्रकार का राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये. विपक्ष इसे आगामी दिनों में बड़ा राजनीतिक मुद्दा बनाने की तैयारी में दिखाई दे रहा है. उधर मनचाही जगह पदस्थापना पाने के लिये हर कोई अपने स्तर पर प्रयास में लगा हुआ है.

कांग्रेस में उपेक्षा से बगावत की राह

रीवा में कांग्रेस के अंदर इस समय आंतरिक गुटबाजी और बगावत खुलकर सामने आ चुकी है. वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच लगातार मतभेद देखे जा रहे हैं. शायद संगठन से ऊपर नेता और कार्यकर्ता अपने को समझने लगे हैं. संगठन सृजन अभियान के मंथन से कुछ नहीं निकला. छत्रपों की राजनीति और गुटबाजी अपने चरम पर है. प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी से लेकर प्रदेश प्रभारी तक रीवा में मंच से संगठन की मजबूती और एकता का पाठ मास्टर साहब बनकर पढ़ाया था. जिसका परिणाम अब सामने दिखने लगा है, संगठन के विपरीत कांग्रेस के पदाधिकारी और कार्यकर्ता आचरण कर रहे हैं. लेकिन इन पर संगठन का चाबुक नहीं चल रहा है. मजे की बात यह है कि हाल ही में नाराज चल रहे कांग्रेसियों ने 'स्नेह मिलन एवं जन संवाद' कार्यक्रम के बहाने बगावत का संदेश देते हुए अपनी एकता दिखाई है. दरअसल इस कार्यक्रम को जिला-शहर कांग्रेस कमेटी ने अनाधिकृत बताया था. मंच के माध्यम से नाराज कांग्रेसियों ने अपनी भड़ास नेताओं और संगठन पर निकाली और कांग्रेस को मजबूत बनाने का आव्हान भी किया. अब सवाल यह उठता है कि ऐसे में कांग्रेस कहां मजबूत होगी. संगठन के विपरीत जाकर नाराज कांग्रेसी पार्टी के अनुशासन को ठेंगा दिखा रहे हैं क्या इस पर प्रदेश या जिला संगठन कोई कार्यवाही करेगा? या फिर ऐसे ही संगठन की मर्यादा का चीरहरण होते धृतराष्ट्र की तरह देखते रहेंगे. कार्यक्रम में अधिकांश वही कांग्रेसी थे जो संगठन में मुंह फुला कर चल रहे हैं .

महामंडलों में नियुक्तियां क्यों नहीं?

महाराष्ट्र की महायुति सरकार को बने डेढ़ वर्ष से ज्यादा समय बीत गया लेकिन अभी तक अनेक महामंडलों व वैधानिक संस्थाओं के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सदस्यों व संचालकों की नियुक्ति नहीं हो पाई. ऐसा समीकरण तय हुआ है कि 49 प्रतिशत महामंडल बीजेपी को 28 प्रतिशत शिवसेना (शिंदे) को तथा 23 प्रतिशत अजीत पवार की राकांपा को दिए जाएंगे. राकांपा (अजीत) ने अपने लिए 23 की बजाय 27 महामंडल की मांग की है. इस मामले में दिक्कत कमाईवाले या मलाईदार महामंडलों पर हक जताने को लेकर हो रही है. कौन से महामंडल महत्वपूर्ण हैं इसकी सूची तीनों पार्टियों की समन्वय समिति को दी गई है. इस समिति में तीनों दलों के 2-2 मंत्री शामिल हैं. इसके बावजूद समिति में सबसे अधिक दबदबा या वर्चस्व राजस्व मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले का माना जाता है. शिवसेना (शिंदे) की ओर से अंतिम सूची अभी तक उपलब्ध नहीं कराई गई है कि उसे कौन से महामंडल चाहिए. बीजेपी की सूची भी तैयार नहीं है. ऐसा तय हुआ है कि अध्यक्ष का नाम वरिष्ठ नेता तय करें और सदस्यों के नामों का चयन पार्टी संगठन करे. शिवसेना (अजीत) में 2 शक्ति केंद्र होने की वजह से नाम पर सहमति नहीं बन पा रही है. एक ओर पार्थ पवार हैं तो दूसरी ओर प्रफुल पटेल व सुनील तटकरे. पद के अनेक इच्छुक होने से नाम तय कर पाना कठिन है. इसलिए जितनी कम नियुक्तियां की जाएं, उतना ही अच्छा ! एक को पद दिया तो अनेक नाराज हो जाएंगे. इसीलिए इतना समय बीतने पर भी महामंडल की नियुक्तियां लटकी हुई है. मराठवाडा और विदर्भ विकास महामंडल का गठन भी नहीं हो पा रहा है. इसी तरह राज्यपाल द्वारा 5 विधायक नियुक्त करने का मुद्दा भी अटका हुआ है. असंतोष और विवाद टालने के चक्कर में निर्णय नहीं लिया जा रहा है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

देवता ही नहीं, सरकार भी सो जाती है, चातुर्मास में गहरी नींद आती है

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, आषाढ़ी या देवशयनी एकादशी से सृष्टि के पालनहार भगवान विष्णु अपनी शेषशय्या पर पूरे 4 माह के लिए गहन निद्रा में सो गए. जब देवता सो जाएं तो कोई मंगल कार्य नहीं हो सकता इसका मतलब यह कि शादी-ब्याह रुक जाएंगे. हमें समझ में नहीं आता कि ब्रम्हांड के नियंता ईश्वर कैसे सो सकते हैं?' हमने कहा, 'यह भगवान विष्णु की योग निद्रा है. इस समय वह ध्यानमग्न रहते हैं. घर में सर्प का अंदेशा होने पर लोगों की आंखों की नींद उड़ जाती है लेकिन भगवान शेषनाग की शय्या पर निश्चिंत सोए रहते हैं और लक्ष्मीजी उनके चरण दबाती है. शेषनाग विष्णु भगवान के साथ अवतार भी लेते हैं. कभी वे छोटे भाई लक्ष्मण के रूप में अवतरित होते हैं तो कभी बड़े भाई बलराम के रूप में!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जहां तक सोए रहने की बात है, विपक्ष मानता है कि सरकार भी सोई हुई है. इस नींद में गाफिल मतकी बात सरकार को महंगाई, बेरोजगारी, पेपर लीक, मंदिर का चढ़ावा चोरी, शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की

मांग, जंतरमंतर का प्रदर्शन, पुलिस का निर्मम अत्याचार, कुछ भी नजर नहीं आता. पीएम लंबे समय तक लगातार चुप्पी साधे रहते हैं. विपक्षी नेता प्रधानमंत्री निवास का घेराव करते हुए कहते हैं- जागो सोनेवालो, सुनो मेरी कहानी!' हमने कहा, 'सोए हुए व्यक्ति को झकझोर कर या शोर मचाकर जगाया जा सकता है लेकिन जो जानबूझकर सोने का ढोंग कर रहा है, उसे कोई कैसे जगाए?'

पड़ोसी ने कहा, 'यदि किसी नेता का बेटा या बेटी जंतरमंतर पर पुलिस की लाठी खाता तो सरकार को होश आता. प्रधानमंत्री को शिक्षामंत्री प्रधान अत्यंत प्रिय हैं. जब धर्मेंद्र प्रधान पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्री थे तब उन्होंने ओएनजीसी से करोड़ों रुपए संघ परिवार से जुड़ी संस्थाओं को दिलाए थे. वह बजरंग दल में भी प्रमुख हैसियत रखते थे. जिस तरह जनमेजय के नाग यज्ञ के समय परीक्षित को डसनेवाला तक्षक नाग खुद को बचाने के लिए इंद्र के सिंहासन से जाकर चिपक गया था, वैसे ही परीक्षा पेपर लीक के लिए जिम्मेदार शिक्षा मंत्री ने प्रधानमंत्री का संरक्षण या अभयदान ले रखा है. अब शुरू हो गया चातुर्मास जिसमें सरकार की निद्रा है खास !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12330 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	■	4	5	
6		■	7	8			■
	■	9				■	10
	■	11		■	■	12	
13			■	14	15		
	■	16	17	■	18		■
■	19	■	20			■	21
22				■	23		

2.चटपटी खाने की चीज 3. तराई 4. मगर, बारह राशियों में से एक 5. श्रवणेंद्रिय, कर्ण 8. बांग्लादेश की मुद्रा 9. ठाट-बाटपूर्ण 10. ललाट, भाल, माथा 12. सम्मान 15. भीमकाय, बड़े डीलडौल वाला 17. मृतक का शोक 19. किस समय 21. जंगल

बाएं से दाएं
1. पंचों की सभा 4. घर, निवास स्थान 6. पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश की एक जाति 7. कान में पहनने का एक प्रकार का अभूषण 9. कला संबंधी कोई महान कृति 11. नर्तकी, नट जाति की स्त्री 12. उम्मीद 13. हमेशा, सदा (सं.) 14. आय 16. लक्ष्मी 18, पराजय, माला 20. रीति, ढंग 22. ओस 23. यूनान देश का निवासी, तेज घोड़ा

ऊपर से नीचे
1. लाला लाजपतराय की उपाधि

Solution 12329

पि	तृ	भो	ज	न	■	स	ती
त	प्त	■	म	त	ल	ब	■
रा	■	बा	ना	■	बा	ल	क
इं	गि	त	■	ला	ल	■	म
ध	र	■	ना	य	ब	■	जो
■	ना	ला	य	क	■	द्वा	र
भ	र	स	क	■	ना	प	■
य	■	क	■	मु	क	र	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. स्वास्थ्य लाभ का योग है. वर्ष के मध्य में स्थिति सामान्य रहेगी. धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वर्ष के अन्त में शत्रु पक्ष से कष्ट होगा. चिन्ता रहेगी. मित्रों के कारण व्यवधान आ सकता है, व्यर्थ के वाद विवाद से व्यय में वृद्धि होगी. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पद का लाभ प्राप्त होगा. सामाजिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शत्रु पक्ष से कष्ट होगा. प्रगति का योग है, सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्य एवं धार्मिक कार्यों में लगना होगा.

कर्क राशि के व्यक्तियों को कार्य श्रम होगा, सफलता मिलेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्रों के कारण कार्य में मदद मिलेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को व्यवधान आ सकता है. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संयमित होकर कार्य करने में मदद मिलेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को व्यवधान आ सकता है. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संयमित होकर कार्य करने में मदद मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य शांतिप्रिय, होगा. अपने कार्यो के प्रति सजग रहने वाला न्यायप्रिय ईमानदार होगा. कला और साहित्य आदि में विशेष लगाव रहेगा. धार्मिक आस्था अच्छी रहेगी. जीवन में सुखी रहेगा.

मेष- युवाओं का ध्यान मौज मस्ती पर रहेगा. खानपान की गड़गड़ी से सेहत बिगड़ेगी. संयम रखकर कार्य करें. व्यर्थ के विवाद से बचें. निजी कार्यों की रूपरेखा बनेगी.

वृषभ- पारिवारिक योजनाओं में बढ़ चढकर हिस्सा लेंगे. लक्ष्य प्राप्ति के विशेष प्रयत्न आवश्यक है. व्यापार व्यवसाय में सावधानी रखें. व्यर्थ के विवाद से बचें.

मिथुन- धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी. पिछले अनुभवों से सबक लेकर वृषभे बढ़े. सतर्कता से कार्य करें. कामकाज पूरा होगा.

कर्क- किसी कार्य को लेकर मन में दुविधा रहेगी. अधिकारी वर्ग खुश रहेगा. शिक्षा संतान के कार्य में सफलता मिलेगी. अनायास शुभ प्रसंग सामने आ सकता है. धीरे-धीरे अड़चनें सुधरेंगी.

सिंह- मित्रों से किया वादा पूरा न करने का मलाल रहेगा, आय में बढ़ोत्तरी के आसार हैं. लोकप्रियता में वृद्धि होगीं. आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति होगी.

कन्या- अचानक नई परेशानियां हैरान कर सकती हैं. विरोधियों से सतक्र रहकर कार्य करें. धार्मिक यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है. नजदीकी सहयोग मिलेगा.

तुला- मनमौजी सोच आपके लिये नुकसानदायक हो सकती है. पारिवारिक विवादों को टालें. स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें. रोजगार की प्राप्ति होगी.

वृश्चिक- सपने साकार करने का समय है, परिश्रम की कटौती न करें. अड़चने धीरे धीरे सुलझेंगी. विलासिता की वस्तुओं का संग्रह होगा. प्रिय व्यक्ति से भेंट होगी.

धनु- कार्य की दृष्टि से खुद को पहिले से अधिक चुस्त दुरूस्त महसूस करेंगे. परिश्रम अधिक करना होगा, नया खर्च सामने आ सकता है.

मकर- रूका हुआ धन मिलने के आसार हैं, कार्यक्षेत्र में नई चुनौतियों का सामना करना पडेगा. सामाजिक कार्य में संलग्नता रहेगी. समस्या का समाधान होगा.

कुम्भ- वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलने से युवा वर्ग उत्साहित रहेगा. नौकरी में तरक्की होगी. महत्वपूर्ण कामकाज बनेगा. माता पिता के सहयोग से समस्याएं हल होंगीं.

मीन- महत्वपूर्ण कार्य शुरू करने में देरी से लाभ मिलना मुश्किल है. मांगलिक कार्य बनेगा. सुख वैभव ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

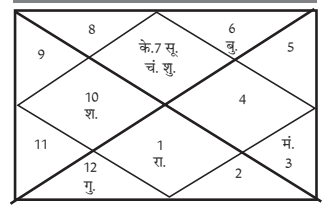

पंचांग

रा.मि. 05 संवत् 2083 आषाढ शुक्ल त्रयोदशी चन्द्रवासरे दिन 4/0, मूल नक्षत्रे दिन 11/26, वैधृति योगे रात 12/41, तैतिल करणे सू.उ. 5/22, सू.अ. 6/38, चन्द्रचार धनु, शु.रा. 9,11, 12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2, 4,6,8 शुभांक- 2,4,8.

व्यापार भविष्य

आषाढ शुक्ल त्रयोदशी को मूल नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, स्टील, जौ, गेहूँ, ज्वार के भाव में नरमी का रूख रहेगा. गुड़ खांड, शक्कर, सरसों, अरंडी, के भाव में नरमी रहेगी. उसके बाद तेजी का योग है. भाग्यांक 3721 है.

SUDOKU 7462

2		8	5	1	9	6		7
					8			1
		7	4	6		8		9
3	2				7			8
1		9		4		7		5
4			2				9	3
6		3		5	1	9		
8			3					
7		1	9	2	6	3		4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7461

7	1	9	8	5	3	2	6	4
4	5	3	6	2	9	7	1	8
6	2	8	4	7	1	9	5	3
9	8	2	7	3	5	1	4	6
1	3	6	9	4	8	5	7	2
5	7	4	1	6	2	8	3	9
8	4	7	5	9	6	3	2	1
3	6	1	2	8	7	4	9	5
2	9	5	3	1	4	6	8	7